International Journal of Advanced Research in Engineering Technology & Science ISSN: 2349-2819
Impact Factor: 7.10
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal)
Email: editor@ijarets.org Volume-11 Issue-12 December-2024 www.ijarets.org

राजेंद्र यादव की कहानियों में समाज और व्यक्ति के बीच संघर्ष

दिलीप कुमार

शोधार्थी, महाराजा सुहेलदेव विश्वविद्यालय, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

डॉ० दीपिका दूबे

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

श्री अग्रसेन महिला महाविद्यालय, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

सार

आधुनिक हिंदी साहित्य के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तित्वों में से एक माने जाने वाले लेखक राजेंद्र यादव अपनी रचनाओं में अक्सर सामाजिक बाधाओं और व्यक्तिगत कठिनाइयों के विषय पर लौटते हैं। उनकी कहानियाँ व्यक्तियों के सामने आने वाली अस्तित्वगत और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों की पड़ताल करती हैं, और ऐसा वे एक ऐसे समाज के संदर्भ में करती हैं जो पारंपरिक और पितृसत्तात्मक है। यादव की रचनाओं के नायक अक्सर महिलाएँ, बुद्धिजीवी या उत्पीड़ित समूहों के सदस्य होते हैं। यादव की रचनाओं की विशेषता ऐसे पात्रों की उपस्थिति है जो समाज की माँगों के सामने अपनी पहचान बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं। उनकी ऐतिहासिक कृति, सारा आकाश, इस मुद्दे को सीधे उजागर करती है क्योंकि किशोर आदर्शवाद और पारिवारिक रूढ़िवादिता के टकराव से व्यक्ति की भावनात्मक घुटन और अलगाव उजागर होता है। इस संघर्ष को एक व्यक्ति की भावनात्मक घुटन और अलगाव के रूप में दर्शाया गया है। अपनी यथार्थवादी और विश्लेषणात्मक कथा के माध्यम से, यादव यह दर्शाते हैं कि कैसे लैंगिक मानदंड, जाति, विवाह और परिवार जैसी सामाजिक व्यवस्थाएँ व्यक्तित्व और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करती हैं। उनके पात्र अक्सर ऐसे समाज में जीवन जीने की प्रक्रिया में भारी मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों से गुज़रते हैं जो अनुरूपता को प्रोत्साहित करता है और असहमति को दंडित करता है। इस पद्धति का उपयोग करते हुए, यादव व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और सामाजिक सुधार के महत्व पर ध्यान आकर्षित करते हैं, साथ ही भारतीय समाज को परिभाषित करने वाली दमनकारी संरचनाओं के प्रति अपनी अस्वीकृति भी व्यक्त करते हैं। उनका काम, जो अक्सर इसे अस्वीकार करने वाले समाज में व्यक्तित्व के संघर्ष पर एक सशक्त प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है, प्रतिरोध, मानवीय स्वतंत्रता और पहचान से जुड़े सतत प्रश्नों पर गहरा प्रभाव डालता है। उनके उपन्यास इन संवादों पर जबरदस्त प्रभाव डालते हैं।

मुख्य शब्द :- *राजेंद्र यादव, व्यक्ति बनाम समाज, संघर्ष, पहचान, आधुनिक हिंदी साहित्य, सारा आकाश, सामाजिक मानदंड।*

परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य के सबसे प्रमुख व्यक्तित्व, राजेंद्र यादव, सामाजिक सत्य, व्यक्तिगत चेतना और मानव मनोविज्ञान की अपनी साहसिक पड़ताल के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाने जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी कथा साहित्य में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। 1950 और 1960 के दशक में हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन के अग्रदूत के रूप में, यादव ने तेज़ी से बदलते समाज में रहने वाले आम लोगों के आंतरिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

उन्होंने यह सब रूमानी आदर्शवाद से हटकर और वास्तविकता को अपनाकर किया। लेखक के मन में इस दुविधा में फंसे व्यक्तियों के प्रति गहरी सहानुभूति प्रतीत होती है, जैसा कि इस तथ्य से पता चलता है कि उनकी रचनाएँ व्यक्तिगत इच्छाओं और सामाजिक मानदंडों के बीच टकराव पर केंद्रित हैं।

यादव की रचनाओं की विशेषता भारतीय समाज के अनेक पहलुओं, जिनमें पितृसत्ता, जाति, विवाह, परिवार और धर्म शामिल हैं, पर निरंतर प्रश्न उठाना है। दोषरहित नायक या नायिका होने के बजाय, उनके नायक वास्तविक व्यक्ति हैं, पुरुष और महिला दोनों, जो एक ऐसे समाज में स्वयं बने रहने के लिए भावनात्मक रूप से प्रयास करते हैं जो उन्हें अस्वीकार करता है। उनके नायक न तो पूर्ण नायक हैं और न ही नायिका। अपनी वर्तमान इच्छाओं और पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों के बीच फँसे एक युवक की मनोवैज्ञानिक पीड़ा उनकी पहली और सबसे प्रसिद्ध कृति, सारा आकाश (1959) में दिखाई गई है, जो 1959 में प्रकाशित हुई थी। यह उस बड़े सामाजिक संघर्ष का एक छोटा संस्करण है जो तब होता है जब किसी व्यक्ति के अपने अनुभव उसकी संस्कृति की परंपराओं के साथ संघर्ष में आते हैं।

विशेष रूप से, यादव द्वारा लैंगिक मानदंडों और महिलाओं की समस्याओं का चित्रण उनकी दूरदर्शी दृष्टि और सांस्कृतिक परिवर्तन लाने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उनकी रचनाओं में सशक्त महिला पात्र अक्सर पितृसत्तात्मक ढाँचों को चुनौती देती हैं और कभी-कभी मौन रहकर, स्वतंत्र होने और अपनी विशिष्टता का प्रयोग करने के अधिकार के लिए संघर्ष करती हैं। इन पात्रों के माध्यम से, यादव भारतीय संस्कृति में व्याप्त भावनात्मक क्रूरता, बेईमानी और कठोरता को उजागर करते हैं। उनका काम आलोचनात्मक और आत्मनिरीक्षणात्मक दोनों है, जिसका लक्ष्य सामाजिक बंधनों की जड़ों और मौन स्वीकृति की मनोवैज्ञानिक कीमत को समझना है।

जिस तरह से यादव आम नागरिक के बढ़ते दुःख को व्यक्त करते हैं, वह उनके द्वारा किए गए सबसे महत्वपूर्ण योगदानों में से एक है। उनकी कहानियाँ, व्यक्तिगत होने के साथ-साथ, सामाजिक आलोचना का भी काम करती हैं जो भारतीय मध्यवर्गीय मान्यताओं और संस्थाओं की बुनियाद पर चोट करती हैं। उनकी कहानियाँ आत्मकथात्मक हैं। आत्म-अभिव्यक्ति और प्रामाणिकता के महत्व की अपनी पड़ताल के माध्यम से, राजेंद्र यादव पाठकों को परंपरा और व्यक्तिगत क्षमता, समाज की अपेक्षाओं और उनकी अपनी इच्छाओं, तथा परंपरा और आधुनिकता के बीच मौजूद संतुलन का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। चूँकि यह व्यक्ति और समाज के बीच निरंतर चल रहे संघर्ष में गहराई से उतरती है, इसलिए उनकी रचनाएँ स्वदेशी भारतीय साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान हैं।

उद्देश्य

1. यह जांचना कि राजेन्द्र यादव का साहित्य, विशेषकर सारा आकाश जैसी उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृतियाँ, किस प्रकार व्यक्तिगत लक्ष्यों और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच तनाव को दर्शाती हैं।

2. यह देखने के लिए कि किस प्रकार राजेंद्र यादव स्थापित सामाजिक संस्थाओं को चुनौती देते हैं और अपने पात्रों और कहानी कहने के तरीकों के माध्यम से व्यक्तिगत स्वायत्तता और पहचान को बढ़ावा देते हैं।

राजेंद्र यादव की जीवनी

मनुष्य स्वभाव से ही मिलनसार प्राणी होते हैं। उनके शहर का प्राकृतिक वातावरण उनमें जीवन भर एक गहरा आत्मीयता का भाव जगाता है। इसमें वे उस स्थान से जुड़ी आशाओं, चिंताओं, खुशियों और दुखों को व्यक्त करते हैं। समय के साथ, शहरी इलाकों में भीड़भाड़ इतनी बढ़ती जा रही है कि लोग शायद ही कभी रुककर अपने आस-पास के माहौल

को महसूस कर पाते हैं। जहाँ तक गाँवों की बात है, तो स्वार्थ का स्तर चिंताजनक स्तर तक बढ़ रहा है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप लोगों का शहरी और ग्रामीण दोनों ही परिवेशों में जीवन व्यतीत करना आम बात होती जा रही है।

एक आम इंसान और एक लेखक में फ़र्क़ होता है, जैसा कि इस धुंध को चीरकर हालात को रोशन करने वाली एक किरण से ज़ाहिर होता है। हालाँकि वे भौतिक रूप से एक ही क्षेत्र में स्थित हैं, फिर भी मानव समाज के प्रति उनकी प्रतिक्रियाएँ एक-दूसरे से बिलकुल अलग हैं। एक लेखक अपने परिवेश के साथ तालमेल बिठाता है और अपने परिवेश के प्रति जागरूक होता है। समाज की वर्तमान स्थिति से वाकिफ़ होना उसे एक अच्छे बदलाव लाने के प्रयास में अपने विशिष्ट दृष्टिकोण से इस मुद्दे पर प्रहार करने के लिए प्रेरित करता है। अपने परिवेश के अवलोकन के दौरान, उसका दृष्टिकोण रचनात्मकता से चिकित्सा की ओर विकसित होता है।

अपने पर्यावरण के प्रति अपनी बढ़ी हुई जागरूकता के कारण, वह अपने काम के लिए अपने समुदाय से काफ़ी कुछ सीख पाता है। इसके अलावा, उसे सैद्धांतिक सुदृढ़ीकरण भी मिलता है।

साहित्य नहीं तो और क्या है? इसलिए, यह समग्र समाज का प्रतिबिंब है। साहित्य का मूल उद्देश्य यह नहीं है कि जो है या जो होना चाहिए, उसकी कहानियाँ सुनाई जाएँ। मैथिलीशरण गुप्तजी ने फ़िल्म "साकेत" में ऐसी टिप्पणियाँ की थीं।

"यदि हम जो कुछ भी हो रहा है, जहां भी हो रहा है, उसके बारे में एक ही बात कहें तो हमने क्या कहा है?

केवल कला ही यह बता सकती है कि क्या, कब और कहाँ घटित होना चाहिए।

इसलिए, कोई भी सफल लेखक कभी ऐसी स्थिति में नहीं रहना चाहेगा जहाँ उसे समाज का ऋणी होना पड़े। वह ज़्यादा से ज़्यादा एक सामाजिक सलाहकार और शुभचिंतक की भूमिका निभाना चाहता है। ऐसी परिस्थितियों में, हम कभी-कभी लेखक के व्यक्तित्व को उसकी रचनाओं के माध्यम से पहचान पाते हैं, और कभी-कभी उसके चरित्र में सृजन के प्रति उसके प्रेम को भी देख पाते हैं।

इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो कलाकार के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना न केवल आवश्यक है, बल्कि संपूर्ण रचनात्मक प्रक्रिया में भी अनिवार्य है।

1.1 जीवन

जन्म

राजेंद्र यादव ने 28 अगस्त, 1929 को आगरा शहर में इस दुनिया में प्रवेश किया। उनका जन्म शहर के अंदर हुआ था। उनका जन्म आगरा के राजा की मंडी मोहल्ले में हुआ था, जहाँ वे एक मिश्रित परिवार के सदस्य थे। उनके दादा, श्री गोकुल सिंह यादव, आगरा कमिश्नरी में काम करते थे। उनके दादा भी वहीं कार्यरत थे। उस समय तक, उन्होंने अपनी स्नातक की डिग्री सफलतापूर्वक पूरी कर ली थी। राजेंद्र यादव उनके बारे में निम्नलिखित कहते हैं: 1925 और 1930 के बीच, मेरे दादा कमिश्नरी में शीर्ष क्लर्क थे, और वे अपनी सेवानिवृत्ति तक उस पद पर रहे। मुझे ठीक से याद नहीं है कि उनका निधन किस दिन हुआ था; फिर भी, उनके चेहरे की एक धुंधली छवि अभी भी मेरी स्मृति में बनी हुई है। लगभग दस साल बीत जाने के बाद, दादी का भी अंततः निधन हो गया।

उनके चौथे बेटे, मिश्रीलाल ने इंटरमीडिएट तक की स्कूली शिक्षा पूरी कर ली थी और एलएमपी प्रमाणपत्र प्राप्त कर लिया था, जिससे वह परिवार के छह पुरुषों में से एक बन गया। परिवार में उसके चार भाई भी थे। वह एक चिकित्सक था और सरकारी नौकरी करता था। शादी के बाद, वह गृहस्थ जीवन में रमने लगा। उसी समय उसकी पत्नी भी उसे छोड़कर चली गई। दो साल बाद, उसने आखिरकार महाराष्ट्र की एक युवती ताराबाई से विवाह कर लिया।

राजेंद्र यादव नाम डॉ. मिश्रीलाल और ताराबाई की पहली संतान का है। ज़्यादा सटीक रूप से कहें तो, उनका नाम राजेंद्र सिंह यादव था। एक आम धारणा है कि नाम कभी भी बहुत लंबा नहीं होना चाहिए। इसी वजह से, उन्होंने अपने पिछले नाम से "सिंग" हटाकर अपना नाम राजेंद्र यादव रखने का फैसला किया। वह अपने छह भाई-बहनों में सबसे बड़े हैं, और राजेंद्र यादव सबसे बड़े हैं। इसके अलावा, उनके तीन भाई हैं जिनके नाम क्रमशः सत्येंद्र, भूपेंद्र और हेमेंद्र हैं। ताराबाई छह बहनों में से एक थीं और उनके पास कला में स्नातकोत्तर और शिक्षा में स्नातक की डिग्री है। उनकी पृष्ठभूमि शिक्षण की भी रही है। उनके भाई और भाभी ने ही उन्हें रहने के लिए जगह दी थी। उनकी दो छोटी बहनें थीं, और उनकी शादी की शहनाई बज रही थी। मरने से पहले उन्होंने एक "सुसाइड नोट" और कुछ पिसी हुई नीली कड़वी दवा छोड़ी थी। जब उसकी ननद अस्पताल में उसका पेट धो रही थी, तो वह रोने लगी और अपनी ननद से लिपटकर उसे बचाने की गुहार लगाने लगी... "ननद, मुझे बचा लो..." "कुसुम ने ऐसा क्यों किया?" वह अपने प्रियजनों को यह सोचकर हैरान कर गई कि वह उन्हें छोड़कर चली गई है।

बाकी पाँच बहनों में से दो जयपुर, दो दिल्ली और एक अमेरिका में रहती हैं। तीन भाई हैं, जिनमें से दो आगरा में रहते हैं। तीसरा भाई फिरोजपुर में रहता है।

इसका परिणाम यह हुआ कि राजेंद्र यादव का जन्म एक संपन्न और सुशिक्षित परिवार में हुआ। राजामंडी में एक विशाल घर था जो सभी चाचा-चाची के घर बसाने से पहले उनका निवास स्थान था। सारा आकाश में जिस मिश्रित परिवार का ज़िक्र है, उसकी शुरुआत इस ख़ास मौके पर हमारे ध्यान में आती है। घर के बारे में पूछे जाने पर, राजेंद्र यादव कहते हैं, "हमारे संयुक्त परिवार का राजामंडी में एक पुश्तैनी घर था।" हालाँकि चचेरे भाइयों के बीच हुए झगड़ों (जिसमें "सारा आकाश" फिल्म बनी थी) के कारण यह घर ढहने की कगार पर है, फिर भी यह अभी भी खड़ा है। कुछ लोग इसे अपना घर कहते हैं। हालाँकि यह घर काफ़ी दूर था, फिर भी मेरे पिता को इस परिवार से कुछ ज़मीन विरासत में मिली थी। उस जगह पर, मेरे छोटे भाई और उनका परिवार अब मेरे पिता द्वारा बनवाए गए घर में रहते हैं।

शिक्षा

उस समय, राजेंद्र यादव के दादा, श्री गोकुल सिंह यादव, कला स्नातक की डिग्री की सभी आवश्यक शर्तें पूरी कर चुके थे। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि वे आगरा कमिश्नरेट में कार्यरत थे। उनके हृदय में सरस्वती के प्रति गहरा सम्मान था। परिणामस्वरूप, उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को सर्वांगीण शिक्षा प्रदान करने का निश्चय किया।

राजेंद्र यादव के पिता होने के साथ-साथ, स्वर्गीय डॉ. मिश्रीलाल ने अनेक पदों पर रहते हुए जनता की सेवा की। साहित्य एक और विषय था जिसने उनकी रुचि को आकर्षित किया। वे उर्दू पढ़ने में बहुत कुशल थे। हिंदी पढ़ने में वे उतने कुशल नहीं थे। हिंदी में पढ़ने के मामले में, वे केवल प्रेमचंद तक ही पढ़ पाते थे , और वह भी "चंद्रकांता" पुस्तक के लिए।

राजेंद्र यादव की माँ, ताराबाई, एक ऐसे परिवार से हैं जो मराठी को अपनी मातृभाषा मानते हैं। उनके पिता श्री रामसिंह जाधव का जन्म और पालन-पोषण महाराष्ट्र के अमरावती में हुआ था। अमरावती से बाहर आने के बाद, उन्होंने मध्य

प्रदेश के अशोक नगर को अपना नया निवास स्थान बनाया। वहाँ एक किताबों की दुकान खोलकर, वे आर्थिक रूप से मज़बूत हुए। शुरुआत में, ताराबाई को हिंदी भाषा का कोई पूर्व अनुभव नहीं था। एक शिक्षक की मदद से, उन्होंने हिंदी पढ़ने और भाषा सीखने की क्षमता हासिल की। बचपन में, वह प्रतिदिन बहुत सारा मराठी साहित्य पढ़ती थीं। पढ़ने के प्रति उनके जुनून की कोई सीमा नहीं थी।

राजेंद्र यादव के परिवार में, उनकी सभी बहनों ने स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी कर ली है। एक भाई की इंजीनियरिंग की डिग्री आखिरकार पूरी हो गई है। दूसरे भाई के पास विज्ञान स्नातक की डिग्री है, जबकि तीसरे भाई के पास कला स्नातक की डिग्री है।

उर्दू वह विषय था जिसे राजेंद्र यादव ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा के दौरान सीखने पर ध्यान केंद्रित किया। जब वह दस और ग्यारह साल के बीच थे, तो वह अपने चाचा के साथ मवाना के रास्ते स्कूल गए, जो मेरठ क्षेत्र में स्थित है। अपनी शैक्षणिक रुचियों के अलावा, उन्होंने खेलों में भी गहरी रुचि बनाए रखी। हॉकी का खेल उनका पसंदीदा खेल था। एक बार, एक छोटा लड़का अपने दोस्तों के साथ हॉकी खेल रहा था, जब एक दुर्घटना के कारण बर्फ पर उसके दाहिने पैर में फ्रैक्चर हो गया। उसके पैर में गहरा घाव था। क्योंकि वह डर गया था, वह घर पर चुप रहा। शुरू में, अप्रभावी, बुनियादी इलाज जारी रहा। महीने के अंत में, पिताजी को पहली बार इसके बारे में पता चला। थोड़े समय के भीतर, वह अपने बेटे के साथ आ गए।

काफ़ी समय तक यादवजी बिल्कुल भी हिले-डुले नहीं। बिस्तर पर ही रहने के कारण उनमें हिलने-डुलने की क्षमता नहीं थी। अपने पिता के निधन से जुड़े एक सवाल के जवाब में, उन्होंने बताया कि इस दौरान उनके पिता ने उनकी बहुत अच्छी देखभाल की और अब उनके पिता का पार्थिव शरीर आँगन की छत के नीचे पड़ा है। आज हम सब रो रहे हैं। बीमार युवा बिस्तर पर लेटे-लेटे कुर्सी पर बैठकर काफ़ी देर तक अलिफ़ लैला पढ़ते रहते थे। इसके अलावा, वे अमीर हमज़ा की कहानी भी विस्तार से सुनाते थे।

राजेंद्र यादव में बचपन से ही किताबों के प्रति एक अदम्य लालसा रही है। समय के साथ, यह उत्साह और भी गहरा होता गया। पढ़ने की आदत को उन्होंने अपने जीवन के हर पहलू में आत्मसात कर लिया, चाहे वह खूब पढ़ना हो या जो भी उनके सामने आता, उसे पढ़ना।

सबसे पहले, अब वह कार्यात्मक विकलांगता का अनुभव कर रहे थे। हालाँकि, वह किसी भी खेल गतिविधि में भाग लेने में असमर्थ थे। ऐसी स्थिति में, साहित्य से जुड़ाव विकसित करना नितांत आवश्यक हो गया। अक्सर यह माना जाता है कि विकलांग व्यक्ति किसी विशेष कार्य के प्रति पूरी तरह समर्पित होकर अपनी कमियों की भरपाई कर सकते हैं। अमीर हमज़ा की तरह, राजेंद्र यादव ने "बहुत कम उम्र में ही दुनिया का सबसे महान उपन्यास, 'दास्तान-ए-अमीर हमज़ा' पढ़ लिया था।"

हो सकता है कि उन्हें बहुत पहले ही यह एहसास हो गया हो कि किसी भी असाधारण लेखक के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ है खूब पढ़ना और लगातार पढ़ना। इसी वजह से, मैं आज भी उनके कमरे में किताबों और पत्रिकाओं का वही संग्रह देखता हूँ जो मैंने बचपन में देखा था, क्योंकि... साहित्य रत्न के ज़रिए ही उन्हें कला में स्नातकोत्तर की डिग्री मिली थी, क्योंकि उन्होंने छोटी उम्र में ही कठोर स्वाध्याय के मंत्र का पालन किया था। हंस के संपादक राजेंद्र यादव भारत, यूरोप और अमेरिका में चल रहे साहित्यिक आंदोलनों पर कुछ गहन टिप्पणी कर सकते हैं।

राजेंद्र यादव के अनुसार, उनके चाचा झांसी में सब-रजिस्ट्रार के पद पर कार्यरत थे। हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी करने तक यह भतीजा उनके साथ रहा। इसके बाद, वे दूसरी बार आगरा गए। स्नातक होने के बाद, उन्होंने उसी संस्थान में अपनी पढ़ाई जारी रखी। राजेंद्र यादव का इस विषय पर यही दृष्टिकोण है। स्कूल के अपने पहले वर्ष के दौरान, मैंने झांसी में कक्षाओं में भाग लिया। मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैं झांसी छोड़कर आगरा वापस चला गया, जहाँ मेरा परिवार पीढ़ियों से रहता आया था। आगे की पढ़ाई का स्थान आगरा था। 1951 में, मैंने हिंदी विषय में मास्टर ऑफ आर्ट्स की डिग्री और हिंदी विषय में गौण विषय के साथ बैचलर ऑफ आर्ट्स की डिग्री प्राप्त की। दोनों डिग्रियाँ तब प्राप्त हुईं जब मैं इस संस्थान का छात्र था।

इसके परिणामस्वरूप, उनके पास नौकरी पाने या स्वतंत्र रूप से स्थापित होने के लिए आवश्यक सभी प्रमाणपत्र थे। इसके बाद, उन्होंने शोध कार्य को भी एक संभावित विकल्प के रूप में देखा। वर्ष 1954 में, वे आगरा से कलकत्ता गए और वहीं बस गए। वहाँ रहते हुए, उन्होंने स्वतंत्र शोध करने का इरादा किया। उनके और उनके घनिष्ठ मित्र श्री भैरवमल के बीच एक अंतरंग बातचीत हुई। सिंधीजी ... "सुनो, मुझे रिसर्च करने में रुचि है, अगर यहाँ कोई ट्यूशन उपलब्ध हो तो..." उन्होंने कहा।

कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय में बिताए अपने समय के दौरान, राजेंद्र यादव एंटोन चेखव द्वारा लिखित उपन्यासों, लिडिया एविलोव द्वारा लिखित संस्मरणों और ओल्गा निप्पर द्वारा लिखे गए पत्रों का अध्ययन करते थे। ई.एन.दासगुप्त की रचनाओं में "चिति" और "ध्यान" विषय उनकी सबसे प्रिय पठन सामग्री में से थे। कहानियाँ ऐसी थीं जो वे सुबह और रात में लिखते थे। इन परिस्थितियों में, उनके लिए अपने शैक्षणिक प्रयासों को किसी एक विषय पर केंद्रित करना असंभव होता। यादवजी की प्रतिक्रिया जब भी उनके मित्र भैरवमल सिंधी जी ने उसे पढ़ाई पूरी करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा था, "अब शायद वो भी न हो!" यही उसका जवाब था। फ़िलहाल मेरा मन पढ़ाई पूरी करने का नहीं है।

इस तरह, उन्होंने खुद को अध्ययन के विचार से अलग कर लिया; फिर भी, उन्होंने कलात्मक अभिव्यक्ति की रचनाएँ जारी रखीं। पढ़ते समय, उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक तरीका मिल गया। लेखक के अनुसार, उन्होंने कहा था, "अपना परिचय देने की इच्छा होती है।"

क्योंकि मैं अपने अनोखे व्यक्तित्व के लिए पहचाना जाना चाहता हूँ और दूसरे लोग इसे स्वीकार करें, इसलिए मैं चाहता हूँ कि मुझे स्वीकार किया जाए। हालाँकि मूल भावना वैसी ही रही होगी, मेरे पैर में लगी चोट ने लेखन को अपना पेशा बनाने के मेरे फैसले पर गहरा असर डाला।

आपदा के तुरंत बाद, वे एक साल से ज़्यादा समय तक बिस्तर पर ही रहे। बिस्तर पर ही रहने के बावजूद, उन्होंने अपनी कल्पनाशक्ति का इस्तेमाल करना नहीं छोड़ा। व्यक्ति जितना अपने परिवेश से बंधा या घिरा होता है, उसकी कल्पनाशक्ति की तीव्रता भी उतनी ही बढ़ती जाती है। यादवजी ने भी यही अनुभव किया जो उनके साथ हुआ। वे बिक्खी के संपर्क में आ गए होंगे। बचपन में रोज़ाना " चाटवाला" खाते थे, जिसने उन्हें कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया होगा। गहन अध्ययन उनकी रचनात्मक क्षमता का आधार बना, जो एक मज़बूत नींव पर आधारित थी। झाँसी स्थित "सुधा माधुरी" पत्रिका ने उन्हें अपनी रचनाएँ अभिव्यक्त करने के लिए एक नया मंच प्रदान किया। इसी पत्रिका के आगामी अंक में, जिसका नाम "जागरण" था, यादवजी की प्रारंभिक रचनाएँ भी प्रकाशित हुईं। ऐसा करके, लेखन को एक पेशे के रूप में अपनाने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास की नींव रखी जा सकती है।

निष्कर्ष

राजेंद्र यादव का उपन्यास व्यक्ति बनाम समाज के शाश्वत संघर्ष को कुशलतापूर्वक चित्रित करता है और उन मानसिक, भावनात्मक और नैतिक बाधाओं पर प्रकाश डालता है जिनका सामना समाज की परंपराओं का साहसपूर्वक विरोध करने वालों को करना पड़ता है। रोज़मर्रा की ज़िंदगी और सच्चे आत्मनिरीक्षण करने वाले व्यक्तियों के यथार्थवादी चित्रण के माध्यम से, यादव स्वतंत्रता, आत्म-जागरूकता और व्यक्तिवाद को प्रोत्साहित करते हैं। परिणामस्वरूप, वे जाति, परिवार और विवाह जैसी पारंपरिक संस्थाओं के दमनकारी पहलुओं को उजागर करते हैं। इसके अलावा, उनकी कहानियाँ सामाजिक मानदंडों की कठोरता की आलोचना करने के अलावा, व्यक्तिगत विकास और सत्ता की अवज्ञा की आवश्यकता पर ज़ोर देती हैं । यह इस बात की गारंटी देता है कि यादव की रचनाएँ आज भी प्रासंगिक बनी हुई हैं, क्योंकि उनमें लिंग, स्वायत्तता और एक अधिक समतावादी एवं करुणामय सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता पर बातचीत को प्रोत्साहित करने की क्षमता है।

संदर्भ

1. अठारह उपन्यास राजेंद्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1999 (आवृत्ति)
2. बीतती सदी और महिलाओं का भविष्य, राजेंद्र यादव और अर्चना वर्मा (संपादित), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2001
3. आज का हिन्दी उपन्यास डॉ. इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1966
4. पुरुष की नजर में औरत राजेंद्र यादव राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2001
5. आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग संघर्ष डॉ. केशवदेव शर्मा, राधा प्रकाशन, दिल्ली, 1991
6. आधुनिक हिंदी उपन्यास, व्यक्तित्व विघटन की कसौटी पर, डॉ. नीरज जैन, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, 2001
7. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य एवं मनोविज्ञान डॉ. देवराज उपाध्याय साहित्य भवन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1963
8. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास डॉ. बच्चन सिंह लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978
9. उपन्यास: रूप और भाव राजेंद्र यादव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1997 -
10. उपन्यासकार राजेंद्र यादव डॉ. अर्जुन चव्हाण अमन प्रकाशन, कानपुर: 1994
11. उपन्यासकार राजेंद्र यादव (समाजशास्त्रीय अध्ययन) डॉ. अजमेर सिंह 'काजल', संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2002
12. एक विश्व समानांतर राजेंद्र यादव (सं.), राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996 (आवृत्ति)
13. नारी उत्तरकथा राजेंद्र यादव एवं अर्चना वर्मा (संपादित), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2002
14. दूसरों के बहाने (संश्लेषण राजेंद्र यादव, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1996 (पुनर्मुद्रण)
15. कथाकार राजेंद्र यादव डॉ. चंद्रभानु सोनावणे, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1972

16. कमलेश्वर: सर्वश्रेष्ठ कहानियां (नई कहानीकार श्रृंखला) राजेंद्र यादव (सं.), राजपाल एंड संस दिल्ली।
17. कल मेरी बात सुनो धूमिल राजशेखर (सं.), युगबोध प्रकाशन, वाराणसी, 1977
18. कहानी: अनुभव और अभिव्यक्ति राजेंद्र यादव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996
19. कहानी: रूप और भावना राजेंद्र यादव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1988
20. काँटेदार बातचीत भाग-1 से भाग -6, 1998, वाणी प्रकाशन, दिल्ली